संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन की अध्यक्ष के भाषण का प्रमुख अंश
ऋषिकेश–कर्णप्रयाग रेल लाइन का शिलान्यास एवं जनसभा
गौचर–चमोली (उत्तराखण्ड)
9 नवंबर, 2011

अपनी बात शुरू करने से पहले कल हरिद्वार में जो दुःखद घटना हुई, उसके बारे में मैं दो शब्द कहना चाहती हूं। शांति–कुंज के आयोजन के समय जो हादसा हुआ, उसमें कई जानें गयीं, काफ़ी लोग जख़्मी हुए। मैं प्रभावित परिवारों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करती हूं और जिन्हें चोट लगी है, उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करती हूं। आज आपके इस सुंदर प्रदेश उत्तराखण्ड का स्थापना दिवस है, मुझे खुशी है, कि इस शुभ अवसर पर आप सबके बीच आने का मौक़ा मिला। मैं आप सभी को इसकी बधाई देती हूं। यह और खुशी की बात है, कि आज के दिन केंद्र की हमारी UPA सरकार ने उत्तराखण्ड के विकास में एक नया अध्याय जोड़ा है।

अभी इस सभा में आने से पहले मैंने ऋषिकेश–कर्णप्रयाग रेल–लाइन का शिलान्यास किया है। यह रेलवे लाइन चार ज़िलों से होकर गुज़रेगी और जो तेरह स्टेशन बनेंगे, उनमें ऋषिकेश, कर्ण–प्रयाग, श्रीनगर, रुद्र–प्रयाग और देव–प्रयाग जैसे महत्वपूर्ण स्थान शामिल हैं।

इसके अलावा एक बात मैं और बताना चाहूंगी, कि सीमा से जुड़े होने के कारण, यहां के भाई–बहनों और सुरक्षा से जुड़े लोगों की तमाम परेशानियों को ध्यान में रखते हुए, हमारी UPA सरकार टनकपुर–बागेश्वर, टनकपुर–जौलगिवी और रामनगर–चौकुटिया को Rail network से जोड़ने की दिशा में भी काम कर रही है। मुझे यकीन है, कि रेल मंत्रालय यह काम जल्दी से जल्दी शुरू करेगा, जिससे पर्यटन और रोज़गार को बढ़ावा मिलने के साथ–साथ आम जनता को फ़ायदा होगा, व्यापार को फ़ायदा होगा, tourism को फ़ायदा होगा।

उत्तराखण्ड की धरती हमारे देश की देव–भूमि है। बदरी–नाथ, केदार–नाथ और पवित्र भागीरथी गंगा की यह भूमि, हज़ारों साल से ऋषियों और मुनियों की साधना और तपस्या की भूमि है, यह ज्ञान और विवेक की भूमि है। इससे सारे देश की आस्था जुड़ी हुई है। इसी के साथ यह वीरों और देश–भक्तों की धरती है, यहां के सैनिकों ने अपने देश के लिए बड़े से बड़े बलिदान किए हैं।

बिना उत्तराखण्ड के भारत के मान–चित्र की कल्पना नहीं की जा सकती। बिना हिमालय हमारी संस्कृति की ऊंचाई नहीं देखी जा सकती।

इसीलिए हमारी हमेशा यही कोशिश रही है, कि उत्तराखण्ड को विकास के लिए, आगे बढ़ने के लिए, ज़्यादा से ज़्यादा सहायता मिले। हमें आरंभ से ही इस क्षेत्र के विकास की चिंता थी।

पिछले सात वर्षों से केंद्र में हमारी UPA सरकार है। उसने विकास के हर क्षेत्र में ज़्यादा से ज़्यादा सहायता दी है। साधारण समय हो या किसी प्राकृतिक संकट का, हमने आगे बढ़कर उत्तराखण्ड को मदद दी है और इसका हमें गर्व है। जब साल भर पहले हरिद्वार में महा–कुंभ था, तो उस समय भी केंद्र सरकार ने खूब सहायता दी थी। यही नहीं, हमने समाज के सभी वर्गों के लिए, ख़ास तौर से ग़रीब और कमज़ोर वर्गों के लिए अलग से सहायता दी है।

मैं सबसे ज़्यादा उत्तराखण्ड की अपनी बहनों से प्रभावित हूं। आप में से कुछ लोग इसे पक्ष–पात भी कह सकते हैं, लेकिन मेरे मन से यही आवाज़ निकलती है, कि इस प्रदेश की सारी सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था, यहां की हमारी बहनों की मेहनत और उनकी निष्ठा पर टिकी हुई है। आप जानते ही हैं, कि महिलाओं की प्रगति और विकास के लिए मैं हमेशा सोचती हूं और जो कुछ संभव है, वह करती भी हूं। पंचायत–राज संस्थाओं में इसीलिए हमने उन्हें पचास प्रतिशत आरक्षण दिया है, जिससे ज़मीनी स्तर पर उनकी आवाज़ बुलंद हो। स्वयं–सहायता समूहों के ज़रिए उन्हें आत्म–निर्भर बनाने, कम ब्याज़ पर बैंकों से कर्ज़ की सुविधा, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं और उनके सहायकों के वेतन में दो–गुना बढ़ोत्तरी जैसे अनेक क़दम हैं।

आपको यह जानकर खुशी होगी, कि अभी हाल में केंद्रीय मंत्रिमण्डल ने Micro, लघु और मझोले उद्योगों के उत्पादन की जो खरीद नीति निर्धारित की है, उसमें केंद्रीय मंत्रालयों, विभागों और सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों के लिए यह अनिवार्य कर दिया है, कि बीस प्रतिशत खरीद का, बीस प्रतिशत हिस्सा दलित और आदिवासी भाई–बहनों के लिए होगा। यह उन्हें औद्योगिक क्षेत्र में प्रोत्साहित करने के लिए है, उनके आर्थिक सशक्तिकरण के लिए है, उन्हें सामाजिक समानता देने के लिए है।

पहाड़ में पर्यटन के साथ, खेती और बागवानी के विकास की बहुत अधिक संभावना है। इस दिशा में राज्य और केंद्र को मिल–जुलकर सभी ज़रूरी क़दम उठाने चाहिए।

मैं यहां इस मौक़े पर राजनीतिक मुद्दे नहीं उठाना चाहती, लेकिन एक–दो बातें ज़रूर कहना चाहती हूं, जिनका संबंध एक–एक आदमी की ज़िंदगी से है, आपकी, हमारी––– सबकी ज़िंदगी से है। आज–कल भ्रष्टाचार की बहुत बात हो रही है। इसमें कोई संदेह नहीं, कि भ्रष्टाचार एक बड़ी बीमारी है और वह किसी न किसी रूप में हर स्तर पर है। इसके ख़िलाफ़ माहौल बनना चाहिए। लेकिन भ्रष्टाचार केवल बातों से नहीं मिटेगा, भ्रष्टाचार सिर्फ़ दूसरे पर उंगली उठाने से नहीं मिटेगा। सबको अपने भीतर भी झांकना होगा। इस तरीक़े से भ्रष्टाचार नहीं मिटेगा, कि कोई यह सोचे, कि हमारा और हमारे लोगों का भ्रष्टाचार बड़ा पवित्र काम है और दूसरे का भ्रष्टाचार, भ्रष्टाचार है। आज बहुत कुछ यही हो रहा है।

मैं पूछना चाहती हूं ऐसे लोगों से, कि RTI कानून किसने बनाया, किसने लागू किया? हाल के समय में सार्वजनिक ज़ीवन में स्वच्छता और भ्रष्टाचार को ख़त्म करने का मुद्दा पहले किसने उठाया? मैं कह सकती हूं, कि हमने उठाया और खुद मैंने उठाया। जहां कहीं भी शिकायतें मिलीं, जांच पूरी होने से पहले ही हमने कार्रवाई की।

आपको मालूम होगा, कि राष्ट्रीय सलाहकार परिषद् जो प्रधानमंत्री ने स्थापित किया है और मैं जिसकी Chairperson हूं, सबसे पहले इस परिषद् ने लोकपाल–बिल की तैयारी के लिए सार्वजनिक तौर पर विचार–विमर्श शुरू किया। आप यह भी जानते हैं, कि प्रधानमंत्री ने खुद कहा है, हमारी पार्टी ने बार–बार कहा है, कि हम एक असरदार, मज़बूत लोकपाल–बिल के पक्ष में हैं, बिल संसद् में पेश होगा और हम उसे लागू करेंगे, तो मैं समझती हूं, कि इतना हल्ला मचाने का क्या मतलब?

आज–कल मेरी एक चिंता मंहगाई को लेकर है। आम आदमी के ऊपर इसका बोझ पड़ रहा है। मैं जानती हूं, सरकार की भी मुश्किलें हैं और यह समस्या क़रीब–क़रीब सारी दुनिया में है। लेकिन पिछले दिनों जब सारी दुनिया भयानक मंदी के दौर से गुज़र रही थी, उस समय भी हम काफ़ी हद तक उससे बचे रहे।

इसलिए सरकार की कोशिश होनी चाहिए, कि हर ऐसा ज़रूरी क़दम उठाए, जिससे आम नागरिक को राहत मिले। यह काम केंद्र और राज्य--- दोनों के सहयोग से ही हो सकता है।

अंत में मैं यही कहना चाहती हूं, कि लोग अपनी-अपनी राजनीति करें, लेकिन अपने स्वार्थ को भूलकर, पहले आपकी चिंता करें, इस पवित्र और सुंदर प्रदेश की चिंता करें और अपने महान् देश की चिंता करें। हम ऐसा कुछ करें, जिससे आने वाली पीढ़ियां हमारे नाम पर गर्व करें।